© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

सामविधान ब्राह्मण में प्रयुक्त कृच्छ्रादि स्वरूप

प्रवीण कुमार
शोधच्छात्र,
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सामविधान ब्राह्मण का वैशिष्ट्य –

सामवेदीय ब्राह्मणों के मध्य इसका तृतीय स्थान है। ताण्ड्य ब्राह्मण और षड्विंश ब्राह्मण शाखान्तरीय ब्राह्मणों के समान अपने को श्रौतयागों तक सीमित रखते हैं। किन्तु इसके विपरीत सामविधान ब्राह्मण जादू–टोने से सम्बद्ध सामग्री का भी प्रस्तावक है। इसमें प्रतिपादित विषय अधिकांशतया धर्मशास्त्र के क्षेत्र में आ जाते हैं। तात्पर्य यह है कि सामविधान ब्राह्मण में श्रौतयागों के साथ ही प्रायश्चित्त प्रयोग, कृच्छ्रादि व्रत, काम्ययाग तथा विभिन्न लौकिक प्रयोजनानुवर्तित कार्यों के लिये मन्त्र, झाड़–फूँक, जादू टोना से सम्बन्धित कर्मादि भी निरूपित हैं। यहाँ पर कृच्छ्रादि व्रतों का निरूपण किया जा रहा है।

सबसे पहले यह प्रश्न बनता है कि कृच्छ्रादि व्रतों को क्यों करें? प्रजापति ने जब सम्पूर्ण जगत् के जीवन के लिये साम, स्वर्ग प्राप्ति हेतु यज्ञों को प्रदान किया । जिस यज्ञ को करके सारे देवतागण स्वर्ग चले गये। उन देवताओं के बीच में अजा, पृश्नियाँ इत्यादि स्वर्ग को पाने में असमर्थ रहीं । असमर्थ इसलिये रहीं क्योंकि कुछ प्राणी ज्ञान के अभाव में अपवित्र कार्यों को करने से यज्ञादि कार्यों को करने में असमर्थ रहीं, शुद्धि के अभाव में स्वर्गप्राप्ति नहीं होती थी। इन प्राणियों को भी स्वर्ग मिले, ये भी यज्ञ इत्यादि कार्यों को करें, अपने को पवित्र. बनायें। इसलिये प्रजापति ने इनके लिये कृच्छ्रादि व्रतों को बनाया। इस कृच्छ्रादि में तीन व्रतों को शामिल किया गया है जिनके नाम कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र और कृच्छ्रातिकृच्छ्र हैं।[1]

(1) कृच्छ्र तप :–

(क) तीन दिन प्रातः भोजन करने का प्रावधान :– इस प्रकार का तप द्वादश दिवसीय होता है। प्रथम तीन रात्रि तक भोजन न करने का प्रावधान है। यहाँ तीन रात्रि का तात्पर्य तीन दिन से भी है इसप्रकार यहाँ तीन रात्रि का तात्पर्य तीन दिन और तीन रात से हुई। अब भोजन न करने का मतलब समझ में आया कि तीन दिन एवं तीन रात्रि पर्यन्त भोजन नहीं करना चाहिये। फिर क्या करें? तब नियम किया गया कि प्रातःकालीन भोजन कर लेना चाहिये। किन्तु उस भोजन में क्षार लवण आदि से रहित तीनों दिन प्रातः भोजन करना चाहिये। इसी को गौतमधर्म सूत्र में भी इसप्रकार कहा गया है कि इस व्रत में प्रथम तीन दिन प्रातः काल हविष्य का भक्षण करें तथा सन्ध्याओं में हविष्य का भक्षण न करें।[2]

(ख) तीन दिन सायं भोजन करने का प्रावधान :– कृच्छ्र व्रत को करते समय द्वितीय तीन दिन केवल रात्रि में हविष्य को खाना चाहिये। दिन में कुछ भी हविष्य खाने का प्रावधान नहीं है।[3]

(ग) तीन दिन अयाचित भोजन :– **" न कंचनं याचेत् "** द्वारा तृतीय तीन दिनों में भोजन के लिये परद्रव्य अथवा स्वद्रव्य दोनों की याचना का निषेध किया गया है। किसी आत्मीय जन जैसे – सेवक, भाई या भार्या आदि से

भी भोजन नहीं मांगना चाहिये। अयाचितान्न अर्थात् बिना किसी सहायता से निर्मित अन्न को दिन अथवा रात्रि में कभी भी एकबार ग्रहण किया जा सकता है तथा भोजन हविष्य ही होना चाहिये।[4]

(घ) तीन दिन उपवास करने का प्रावधान :– कृच्छ्र व्रत के अवसर पर चतुर्थ तीन दिनों में उपवास करना चाहिये।[5] कुछ इसप्रकार का मनुस्मृति में भी कृच्छ्रस्वरूप का लक्षण है –

त्र्यहं प्रातस्त्र्यहं सायं त्र्यहमद्यादयाचितम्।
त्र्यहं परं च नाश्नीयात् प्राजापत्यं चरन् द्विजः।। मनुस्मृति 11,211

पहले दिन केवल दिन में , द्वितीय दिन केवल रात्रि में , तृतीय दिन अयाचित भोजन तथा चतुर्थ दिन पूर्णतः उपवास करें तथा यही किया पुनः चार चार दिन की दो अवधियों में की जाती है। इसप्रकार इस प्राजापत्य में चार चार दिन की तीन अवधियाँ होती हैं। प्राजापत्य के इन दोनों ही प्रकारों को अनुलोम्य' अर्थात् उचित एवं सीधे क्रम से बना हुआ कहा गया है। यदि इसी उपर्युक्त क्रम को पलट दिया जाये, यथा प्रथम तीन दिन उपवास पुनः तीन दिन अयाचित भोजन किया जाये। इसी क्रम को कुल तीन अवधियों अर्थात् बारह दिनों तक दोहराया जाये तो प्राजापत्य के ये प्रकार प्रातिलोम्य'' कहे जाते हैं। '' आपस्तम्ब स्मृति में वर्ण व्यवस्था के अनुसार कृच्छ्रव्रत की विधि बताई गई है– **'आपस्तम्ब**' महोदय ने द्वादश दिवसीय प्राजापत्य को चार भागों में विभाजित कर पादकृच्छ्र की व्यवस्था दी है । इस विधि के अनुसार तीन दिन उपवास करने पर प्रथम प्रकार का कृच्छ्र पादकृच्छ्र कहलाता है तथा यह ब्राह्मण को दिया जाना चाहिये। तीन दिन अयाचित भोजन करने पर द्वितीय प्रकार का पादकृच्छ्र होता है तथा यह क्षत्रिय को दिया जाना चाहिये । तृतीय प्रकार का कृच्छ्र तीन दिन तक सायं भोजन करने पर होता है तथा यह पादकृच्छ्र वैश्य वर्ण को दिया जाना चाहिये । चतुर्थ प्रकार का कृच्छ्र प्रातः भोजन करने पर होता है तथा यह शूद्र वर्ण के किसी व्यक्ति को दिया जाना चाहिये।[6] तीन दिन प्रातः तथा तीन दिन सायं भोजन न करके तीन दिन अयाचित व तीन दिन उपवास किया जाये तो अर्धकृच्छ्र होता है तथा तीन दिन के सायं भोजन को वर्जित कर तीन दिन प्रातः तीन दिन अयाचित अन्न ग्रहण कर तीन दिन उपवास करने पर पादोनकृच्छ्र निष्पन्न होता है।

कामनाओं की शीघ्र पूर्ति के लिये व्रत[7] :– यदि कोई व्यक्ति शीध्र ही पापमुक्त हो जाना चाहता है तो उसे कामनाओं की पूर्ति के लिये दिन में खड़ा रहना चाहिये और दिन में आसन पर बैठना , शयन आदि नहीं करना चाहिये तथा रात्रि में बैठकर ही सोना चाहिये। इसके अतिरिक्त व्यक्ति को सत्य का आचरण करना चाहिये। अनार्य पुरुषों एवं नारियों से नहीं बोलना चाहिये। इसके साथ साथ 'रौरव' एवं ' यौधाजय' नामक सामों का नित्य गान करना चाहिये तथा यज्ञ के अवसर पर प्रातः मध्याह्न और सायं स्नान करना चाहिये।[8] स्नान के उपरान्त **'आपो हिष्ठीयाभिः'** का जप करें तथा जल से इन चार मन्त्रों का तर्पण करे। अब पुनः प्रश्न बनता है कि तर्पण किसका करें? तो तर्पण जल से करें । जल से स्नान करने के बाद जल से चार मन्त्रों के द्वारा तर्पण करना चाहिये। यद्यपि स्पष्ट रूप से किसी देवता विशेष का उल्लेख नहीं है फिर भी सर्वप्रथम चारों मन्त्रों से आदित्य का उपस्थापन करना चाहिये। आदित्य को अभिमानी परमेश्वर प्रतिपादित किया गया है। यहाँ प्रथम मन्त्र[9] से 'अहम' शब्द अहंकार का वाचक है जिसके चिन्तन से सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न हुआ । इसप्रकार 'अहम' ही परमेश्वर है इसलिये उस 'अहम' को नमस्कार है। जिसको सारे लोगों के द्वारा पूछे जाने पर अपने आप को 'अहम' कहकर बतलाते है। उस 'अहम' के लिये नमस्कार है। 'मोहम' के लिये 'मोह' शब्द है जो विचित्र ज्ञान से सर्वत्र पूजित होता है ऐसे 'मोहम' के लिये नमस्कार है। 'मँहम' के लिये 'दानकर्मा' कहा जाता है। अपने भक्तों के लिये बहुत धन प्रदान करने के कारण 'मंहम' के लिये नमस्कार है। 'धून्वते' के लिये नमस्कार है। 'धून्वन्' अपने भक्तों के पाप को दूर करते हुये परिहर्ता के रूप में परमेश्वर के लिये नमस्कार है। 'तापस के लिये नमस्कार है। जो तपस्वि का वेष बनाये हुये रहता है उसको नमस्कार है। 'पुनर्वसु' के लिये सूर्यात्मा शब्द है जो अपनी किरणों से सम्पूर्ण जगत् को वासित करता है ऐसे पुनर्वसु के लिये नमस्कार है।

अब द्वितीय मन्त्र के द्वारा जल का तर्पण करना चाहिये। 'मौंज्याय' उस 'मौंज के लिये नमस्कार है जो जगत् की सुन्दरता और उसकी योग्यता के लिये जाने जाते हैं। उस 'और्मी' के लिये नमस्कार है जो स्नान करने के लिये जल की लहरों को बहाता है। उस 'सौमी' के लिये नमस्कार है जो अपनी रमणीयता और शीतलता के लिसे प्रसिद्ध हैं। उस ' शमी' के लिये नमस्कार है जो मंगलकारी एवं परमेश्वर के लिये जाने जाते हैं।[10]

अब तृतीय मन्त्र के द्वारा जल से तर्पण करना चाहिये। उस पार के लिये नमस्कार है जो सम्पूर्ण कर्मों को समापन की ओर ले जाते हैं। सुपार क के लिये नमस्कार है जो कार्यों को सम्यकतया समापन की ओर ले जाते हैं। महापार के लिये नमस्कार है जो अत्यन्त तीव्रता से कर्म को समाप्त करते हैं। सुन्दर और विशाल शब्दों के कर्म

समाप्ति के भेद से जानना चाहिये। संसार रूपी समुद्र की पारभूत एवं प्रपंचातीत स्वरूप तारतम्य भेद से सुन्दर एवं विशाल शब्दों के भेदों को देखना चाहिये।[11]

अब चतुर्थ मन्त्र के द्वारा उस पुरुष को नमस्कार है जो हृदय कमलरूपी पुरी में शयन करता है अथवा जो अपने आप में पूर्ण है अथवा पुरुष परमेश्वर है। जो उत्तम पौरुष से युक्त शोभायमान पुरुष के लिये नमस्कार है। इस पुरुष में जो महान है वह महापुरुष है उसके लिये नमस्कार है। जो स्तुतियों एवं गुणों के द्वारा वृद्धि को प्राप्त करते हैं ऐसे उस मध्यम पुरुष के लिये नमस्कार है। पुरुष तीन प्रकार के बताये गये हैं– 'अवर, मध्यम और उत्तम'। अवर में मनुष्यादि प्राणिसमूह मध्यम में देवादि और उत्तम में मनुष्य और देवताओं के कारणभूत परमेश्वर आता है। इनको नमस्कार है। अथवा विराट, हिरण्यगर्भ, परमात्मा के भेद से पुरुष का अवर, मध्यम और उत्तम भेद समझना चाहिये। ज्ञान को जानने वाला वा यज्ञ का ज्ञान रखने वाला संगोष्ठी व सभाओं में जाता है तो वहाँ वेदादि अधिगम करने के लिये ही जाता है ऐसे ब्रह्मचारी को प्रणाम है। यह शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है–

''तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि'' । शतपथ ब्राह्मण 14/5/9/28

इसप्रकार श्रुति है कि इन चार मन्त्रों से सूर्य अभिमानी परमेश्वर प्रतिपादित होता है।[12] इसके बाद इन्हीं चारों मन्त्रों से प्रत्येक दिन प्रत्येक सवन में आदित्य का उपस्थापन करना चाहिये तथा इह्लीं मन्त्रों से प्रतिदिन एक बार आज्य की आहुति प्रदान करते हुये सवन(यज्ञ) करना चाहिये।[13] इसप्रकार द्वादश रात्रि बिताकर कृच्छ्र के अन्त में तेरहवें दिन देवताओं के लिये स्थाली में चरू बनाकर बलि प्रदान करना चाहिये।[14] चरू इसप्रकार होवे कि उससे देवताओं के लिये नव आहुतियाँ बन सके। जैसे–

अग्नये स्वाहा। सोमाय स्वाहा । अग्नीषोमाभ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्राय विश्वेभ्यो देवेभ्यो ब्रह्मणे प्रजापतयेऽग्नये स्विष्टकृत इति। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7 व गौतम धर्मसूत्र 3/8/16)।

इस विधि से होम करने के बाद तेरहवे दिन ब्राह्मणों को अन्न सुवर्णादि भोजन से तृप्त करके प्रसन्न करें।[15]

(2) अतिकृच्छ्र व्रतः– यह अतिकृच्छ्र व्रत कृच्छ्रव्रत के ही सदृश माना जाता है। अतिकृच्छ्र व्रत में प्रथम तीन दिन प्रातः , द्वितीय तीन दिन सायं तथा तृतीय तीन दिन अयाचित भोजन करना चाहिये किन्तु ग्रास(कौर या निवाले) का परिमाण पाणिपूरान्न अर्थात् एक ग्रास ही होना चाहिये। व्रत के समय में पाणिभर अन्न एक बार ही खाना चाहिये। दूसरे ग्रास का नियम नहीं है अर्थात् दूसरा कौर नहीं खाना चाहिये।[16] इसके उपरान्त अग्रिम चतुर्थ तीन दिन उपवास करना चाहिये। अतिकृच्छ्र व्रत में केवल उतना ही खाना चाहिये जितना कि एकबार दाहिने हाथ में ग्रास ग्रहण कर सकें। धर्मसूत्रकार' गौतम' ने भी यही बताया है कि जो पुरुष कल्मष से शीघ्र ही शुद्ध होना चाहे उसे दिन में खड़ा रहना चाहिये तथा रात्रि में बैठे रहना चाहिये। सदा सत्य भाषण करना चाहिये तथा अनार्यों के साथ सम्भाषण नहीं करना चाहिये।[17]

(अ) क्षिप्रकाम्यर्थ व्रतः– सामविधान ब्राह्मण में कामनाओं की शीघ्र पूर्ति के लिये दिन भर खड़े रहने के लिये कहा गया है। ऐसा इसलिये कहा गया है कि मनुष्य को सदा कार्य के प्रति उदासीन रहना चाहिये। रात्रिकाल में भी न तो आसन पर बैठना चाहिये न तो शयन करना चाहिये किन्तु वसिष्ठ महोदय ने क्षिप्रकामनाओं की पूर्ति के लिये अतिकृच्छ्र की अन्यप्रकार से विधि बतायी है जो कि इसप्रकार है–

''अथ चेत्त्वरते कर्तुं दिवसं मारूताशनः
रात्रौ जलाशये व्युष्टः प्राजापत्येन तत्समम्।
सावित्र्यष्टं सहस्रं तु जपं कृत्वोत्थिते रवौ
मुच्यते पातकैः सर्वैयदि न ब्रह्महा भवेत्।।'' वसिष्ठ धर्मसूत्र 27/17–18

वसिष्ठ ने जलाशय में खड़े रहने का नियम देकर इसे किंचित कठिन कर दिया है। सामविधान ब्राह्मण में पुनः कहा गया है कि प्रतिदिन पवित्र रौरव तथा यौधाजय' नामक साम का गान नित्य करना चाहिये।[18] तथा तीनों सवनों में स्नान करें। इसके पश्चात् ''आपो हिष्ठीयाभिः'' आदि ऋचाओं के द्वारा अपने आपको मार्जन करें। इसके पश्चात् जल से तर्पण करें। जल से तर्पण करने के लिये नमः से प्रारम्भ होकर चार मन्त्रों का जप करना चाहिये।[19]

इसके बाद इह्लीं चारों मन्त्रों से प्रतिदिन प्रत्येक सवन में आदित्य उपस्थापन करना चाहिये तथा इह्लीं मन्त्रों से प्रतिदिन एकबार घी की आहुति प्रदान करते हुये हवन करना चाहिये। शेष सारे नियमों को कृच्छ्रव्रत के समान ही जानना चाहिये।

(3) कृच्छ्रातिकृच्छ्र :– इस व्रत में भोजन काल के समय केवल जल पीना चाहिये। तात्पर्य यह है कि प्रथम तीन दिन प्रातः, द्वितीय तीन दिन सायं, तृतीय तीन दिन अयाचित जल का पान करना चाहिये तथा चतुर्थ तीन दिन उपवास करें। यह उदकपान आचमन से व्यतिरिक्त नहीं होता अर्थात् जितना जल एक बार हाथ से ग्रहण करने की सामर्थ्य हो उतना ही जल नव दिनोंमें प्रत्येक दिन एक बार पीना चाहिये तथा उपवास के तीन दिनों मे जल भी न पियें। इसप्रकार यह कृच्छ्र द्वादश रात्रि भर निराहार रहकर किया जाता है। याज्ञवल्क्य के मतानुसार यह व्रत इक्कीस दिन का होता है।[20] यहाँ 'पयः' का तात्पर्य जल ही है। ये सारे व्रत शक्ति के अनुसार ही किये जाने चाहिये।

(अ) पवित्र होने के लिये करें कृच्छ्रव्रत :– कृच्छ्र नामक द्वादश दिवसीय व्रत को करने से मनुष्य पापों से शुद्ध हो जाता है। इसीलिये मनुष्य आज भी यज्ञादि कार्यों में यज्ञ करने से पूर्व पवित्र होने के लिये जल का उत्पवन करता है। पवित्र होने से यज्ञादि कर्मों को करने के योग्य हो जाता है।[21] अथवा अपने वर्ण का कर्म अर्थात् षोडश संस्कारों को करने के लिये योग्य हो जाता है।

(ब) महापातकों से मुक्त होने के लिये करें अतिकृच्छ्रव्रत :– अतिकृच्छ्र व्रत विशेष को करने से महापातकों के अतिरिक्त जो छोटे–छोटे उपमहापातकों से भी छूट जाते हैं। ऐसा सामविधान ब्राह्मण में उल्लिखित है।[22]

(स) सभी पापों से मुक्ति हेतु करे कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत :– कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत को करने से मनुष्य महापातक सहित सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।[23]

सभी व्रतों को करने का फल :– जो कोई पुरुष या स्त्री कृच्छ्रादिव्रतों को सम्यक् विधि से करता है वह सभी विद्याओं में निपुण हो जाता है। सभी देवताओं को जानने वाला हो जाता है। सारे देवता इस व्रत को करके सब कुछ जानने वाले हो जाते हैं।[24] गौतमधर्मसूत्र में भी कहा गया है कि इन तीन व्रतों को करने वाला सभी वेदों में पूर्ण और सभी देवों में प्रख्यात हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

(1) (सामविधान ब्राह्मण 1/2/1) ।

(2) हविष्यान्प्रातराशान्भुक्त्वा तिस्रो रात्रीर्नाश्नीयात्। (गौतमधर्मसूत्र 3/8/2)

(3) अथापरं त्र्यहं नक्तं भुंजीत । (सामविधान ब्राह्मण 1/2/3)

(4) अथापरं त्र्यहं न कंचन याचेत्। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/4)

(5) अथापरं त्र्यहमुपवसेत्। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/5)

(6) (आपस्तम्ब स्मृति 1,13–15)

(7) तिष्ठेदहनि रात्रावासीत क्षिप्रकामः । (सामविधान ब्राह्मण 1/2/6)

(8) सत्यं वदेत्। अनायैर्न संभाषेत। रौरवयौधाजये नित्यं प्रयुंजीत। अनुसवनपुदकोपस्पर्शनमापोहिष्ठीयाभिः। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7)

(9) नमोऽहमाय मोहमाय मँहमाय धून्वते तापसाय पुनर्वसवे नमो नमः । (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7)

(10) मौंज्यायौर्म्याय सौम्याय शम्याय शिवाय नमो नमः। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7)

(11) पाराय सुपाराय महापाराय पारदाय पारविन्दाय नमो नमः। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7)

(12) पुरुषाय सुपुरुषाय महापुरुषाय मध्यमपुरुषायोत्तमपुरुषाय ब्रह्मचारिणे नमो नमः । (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7)

(13) एतदेवादित्योपस्थापनम्। एता एवाज्याहुतयः। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7 व गौतमधर्मसूत्र 3/8/13–14)

(14) द्वादशरात्रस्यान्ते स्थालीपाकं श्रपयित्वैताभ्यो देवताभ्यो जुहुयात्। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7 व गौतमधर्मसूत्र 3/8/15)

(15) ततो ब्राह्मणतर्पणम्। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7 व गौतमधर्मसूत्र 3/8/17)

(16) यावत्सकृदाददीत् तावदश्नीयात्। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/9)

(17) तिष्ठेदहनि रात्रावासीत् क्षिप्रकामः। सत्यं वदेत्। अनार्यैर्न संभाषेत्। (गौतमधर्मसूत्र 3/8/6–8)

(18) रौरवयौधाजये नित्यं प्रयुंजीत। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7)

(19) नमोऽहमाय मोहमाय मँहमाय धून्वते तापसाय पुनर्वसवे नमो नमः। मौंज्यायौर्भ्याय सौम्याय शम्याय शिवाय नमो नमः। पाराय सुपाराय महापाराय पारदाय पारविन्दाय नमो नमः। पुरुषाय सुपुरुषाय महापुरुषाय मध्यमपुरुषायोत्तमपुरुषाय ब्रह्मचारिणे नमो नमः। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/7)

(20) कृच्छ्रातिकृच्छ्र पयसा दिवसानेकविंशतिम्। (याज्ञवल्क्यस्मृति 3/320)

(21) प्रथमं चरित्वा शुचिः पूतः कर्मण्यो भवति। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/11)

(22) द्वितीयं चरित्वा यत्किंचिदन्यन्महापातकेभ्यः पापं कुरुते तस्मात् प्रमुच्यते। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/11)

(23) तृतीयं चरित्वा सर्वस्मादेनसो मुच्यते। (सामविधान ब्राह्मण 1/2/11)

(24) अथैताँस्त्रीन् कृच्छ्राँश्चरित्वा सर्वेषु वेदेषु स्नातो भवति। सर्वेषु देवेषु ज्ञातो भवति। यश्चैवं वेद यश्चैवं वेद।। (सामविधान ब्राह्मण1/2/12)